

---

# Shri Krishna Stotram

श्रीकृष्णस्तोत्रम्

## Document Information

---

Text title : Krishnastotram by Umeshvarananda

File name : kRRiShNastotramumeshvarAnanda.itx

Category : vishhnu, krishna, stotra

Location : doc\_vishhnu

Author : Swami Umeshvaranand Tirth

Proofread by : Paresh Panditrao

Description/comments : Ganga Mahatmya And Stuti Ratnavali By Swami Umeshvaranand Tirth

Latest update : July 8, 2023

Send corrections to : [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

July 8, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Shri Krishna Stotram

---

### श्रीकृष्णस्तोत्रम्

---



दिव्यातिदिव्यं परमञ्चसुन्दरं  
श्यामाङ्ग शोभा सुविकाशभुज्ज्वलम् ।

केयूरवान् कुण्डलवान् किरीटिवान्  
पीताम्बरं वंशीधरं हरिं भजे ॥ १ ॥

यन्द्राननं शोभितमम्बुजेक्ष्णं  
श्रीवत्सवक्षस्थल मालिकादिभिः ।  
विभूषितं मेभलयाङ्गुलीयकै-  
र्वृन्दावने वंशीधरं हरिं भजे ॥ २ ॥

आनन्दं शान्तिप्रदं सुविग्रहं  
आनन्दकन्दं सरसिरुहेक्ष्णम् ।  
सुमङ्गलं वाञ्छितं सनातनं  
नमामि कृष्णं परमं सुदुर्लभम् ॥ ३ ॥

मध्ये निकुञ्ज मध्येवनकान्ति शोभितं  
गोपाङ्गनानां परमं सुसौष्यम् ।  
समाह्वयन्तं निकेटस्थिताञ्जनान्  
सदा प्रसन्नं प्रणामामितं हरिम् ॥ ४ ॥

मधुरं मधुरं नादं वंशीवादन कारकम् ।  
समाह्वयन्तं गोपीनां तं नमामि कृपानिधिम् ॥ ५ ॥

निकुञ्जमध्येगुप्तं य राधया सह संयुतम् ।  
रमणीयं सुरपतिं कृष्णं वन्दे दयानिधिम् ॥ ६ ॥

गोपीनां सुमुष्णीनाञ्च रासडास समागमः ।  
परमानन्द दातारं नमामि श्रीहरिम्परम् ॥ ७ ॥

सुमुष्णैरुलीधृत्वा वाद्यन् पूरयन् रसान् ।

त्रैलोक्यानन्देन्देवं कृष्णं वन्दे सताङ्गतिम् ॥ ८ ॥

समाकर्षयन्तं सुधावर्षयन्तं

समास्वादयन्तमनुरागिणीनाम् ।

सदानन्दकारिं सुमालीं मुरारीं

सदालम्बयेलं तवैव सकाशम् ॥ ९ ॥

श्रीकृष्णकृष्णभगवन् मम दीनबन्धो

त्रैलोक्यरक्षक विमोकराणानिधानः ।

संसारभीतिदहन सुप्त्रपधारिन्

वन्दे सदैव यरणौ तव शान्तिदायके ॥ १० ॥

श्रीकृष्णकृष्णेशतिक्षरद्रयं प्रियं

शान्तिप्रदं नाम सुमङ्गलञ्चते ।

वाङ्गद्गदञ्चित्तद्रवं य येषां

तेयान्ति सद्यम्भवसिन्धु पारम् ॥ ११ ॥

श्रीकृष्ण नामं परमं सुदुर्लभं

ये ये जपान्तीलु सदैवमर्त्याः ।

तेधन्यभाग्यासुकृताकृतार्थाः

तरन्तिपारम्भवसागरस्य ॥ १२ ॥

इति श्री स्वामी उमेश्वरानन्दतीर्थविरचितं श्रीकृष्णस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

Proofread by Paresh Panditrao

---

—  
*Shri Krishna Stotram*

pdf was typeset on July 8, 2023

—  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

